बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय

बाँदा – २१०००१ (उ0प्र0)

Banda University of Agriculture & Technology, Banda- 210001 (U.P.)

मौसम आधारित कृषि सलाह

(Agro-Weather Advisory Bulletin No.: 115 /2024) **Year:6th**

जिला: बाँदा	**जारी करने की तिथि: 01/10/2024**

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	**शाक-भाजी**	➢ सब्जी मटर, आलू, पालक, मेथी, गाजर, मूली, फ्रांस बीन, चुकंदर, शलजम, धनिया आदि की बुआई के लिए खेत तैयार कर लें तथा पखवाड़े के अंत में बुआई प्रारंभ कर दें। ➢ पत्ता गोभी, फूल गोभी, गांठ गोभी, ब्रोकली, मिर्च, टमाटर, बैगन, शिमला मिर्च की पौध तैयार हो तो रोपाई करें। ➢ खरीफ सब्जियों की खड़ी फसल में समुचित नामी व रोग एवं कीट प्रबंधन करें। ➢ रोपाई की जाने वाली सब्जियों में नमी संरक्षण तथा खर पतवार नियंत्रण हेतु सूखी घास अथवा काली पॉलिथीन की मल्चिंग ;पलवार) प्रयोग करके रोपाई करें।
2-	**शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन**	**धान–:** धान की शीघ्र तैयार होने वाली किस्मों में 80 प्रतिशत दाने पड़कर कड़े होने पर कटाई कर लें। देर से बोई गई फसल में दाने बनते समय खेत में सिंचाई अवश्य करें। **अरहर–:** खेत में पानी नहीं जमने दें तथा उचित जल निकास का प्रबन्धन करें। **तोरिया–:** सिंतम्बर माह में बोई गई तोरिया की फसल में घने पौधों को निकाल कर पौधों की आपसी दूरी 10–15 सेमी. कर लें तथा निराई–गुड़ाई भी कर देनी चाहिये। यदि सिचांई उपलब्ध हो तो तोरिया में फुल निकलने पर अर्थात बुवाई से 25–30 दिन बाद एक सिंचाई अवश्य कर दें। **राई– सरसों–:** राई–सरसों की बुवाई माह के अन्त में प्रारम्भ करें। समय पर बुवाई करने से माहूँ–चेपा, कीट का प्रकोप कम होता है। उन्नत किस्मों के प्रमाणित बीज की बुवाई करें। **चना, मटर, मसूर–:** चना, मटर, मसूर की बुवाई के लिये फसल कटाई के बाद खेत की तैयारी प्रारम्भ करें। इन फसलों को 30 सेमी. की दूरी पर कतार में बोना चाहियें। प्रति हेक्टेयर देशी या छोटे बीज बोने के लिये 60–75 किग्रा0 बड़े बीज वाले चना एवं मटर के लिये 80–100 किग्रा0

		तथा मसूर के लिये 30–35 किग्रा0 बीज की आवश्यकता पड़ती है। इन फसलों को उपचारित करके ही बोना सुनिश्चित करें। रबी में बोयी जाने वाली दलहनी–तिलहनी फसनों में खरपतवार प्रबन्धन हेतु खरपतवार नाशी जैसे पैन्डीमेथलिन, टोपरामिजोन, क्यूजालोफोप मिथाइल, आक्सिफ्लुओर्फेन, प्रोपाक्यूजाफोप आदि की उपलब्धता सुनिश्चत करें जिससे समय पर प्रयोग किया जा सके।
3-	पशुपालन प्रबंधन	वर्षा ऋतू में बकरी पालकों के लिए ध्यान योग्य बातें– ➢ बकरी को सूखे स्थानों में बांधे और उनके बाँधने के स्थान पर साफ सफाई रखें जिससे उन्हें बीमारी से बचाया जा सके। ➢ बकरी का अलग से बाड़ा अवश्य बनाएं और उनके बैठने के लिए लकड़ी या बांस का मचान बनाएं जिससे उन्हें नमी से बचाया जा सके। ➢ बकरियों को अन्तःपरजीवी नाशक दवा 3–4 महीने के अंतराल पर अवश्य देवें जिससे बकरियों की शारीरिक वृद्धि एवं भोजन उपयोग क्षमता बढ़ सके। ➢ बकरियों में होने वाले प्रमुख रोग (पी०पी०आर०) व एन्टिटॉक्सीमिया हे जिससे बचाव हेतु इनका टीकाकरण समय–समय पर करायें तथा बीमारी से होने वाले नुक्सान से बचा जाए। ➢ सभी बकरियों को सामूहिक रूप से बरसात से पहले कृमिनाशक दवा जरूर दें। ➢ बरसात के मौसम में सूरज निकलने के दो घंटे बाद ही बकरियों को चराने जाना चाहिए और धूप रहते हुए ही चरा के वापिस ले आना चाहिए जिससे इनमे रोगों की संख्या कम होती है। ➢ रात का बचा हुआ चारा साथ ही गीली घास एवं गीला चारा बकरियों को न खिलावे। ➢ बकरियों को चरने के अलावा नियमित रूप से 100–150 ग्राम दाना व 1.5–2 किलोग्राम सूखा चारा/भूसा देना चाहिए जिससे इनकी बरसात का मौसम में भी शारीरिक वृद्धि नहीं रुकेगी।
4–	**कीट–प्रबंधन**	➢ धान में हरा फुदका के नियंत्रण हेतु कार्बोफ्यूरान 3 जी 20 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से बुरकाव करें। भूरा फुदका के नियंत्रण हेतु यदि सम्भव हो तो खेत से पानी निकाल देना चाहिए व यूरिया की टाप ड्रेसिंग रोक देनी चाहिए। नीम तेल @ 5 मिली प्रति ली के घोल का छिड़काव करें अथवा पाईमेट्रोजेन 50 प्रतिशत डब्ल्यू जी 300 ग्रा0 प्रति हे0 500 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिये। धान में सैनिक कीट के नियंत्रण हेतु फसल की नियमित निगरानी करते रहना चाहिए। गंधी कीट के प्रकोप की दशा में फेनवेलरेट 0. 04 प्रतिशत धूल 20–25 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से खेत में प्रयोग करना चाहिये।

		➢ अरहर में चोटी बेधक कीट के नियंत्रण हेतु क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 2.00 लीटर प्रति हे0 800–1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिये। ➢ तिल में कैप्सूल बेधक के नियंत्रण हेतु क्लोरंतरनिलीप्रोल रसायन का 4 मिलीलीटर प्रति 10 लीटर की दर से प्रयोग करें व फिल्लोडी रोग के वाहक कीट फुदका की रोकथाम हेतु फ्लॉनिकामिड 50 डब्ल्यू जी 4 ग्रा0 प्रति 10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। ➢ मक्का/ज्वार/बाजरा में फाल आर्मीवर्म के नियंत्रण हेतु इमामेक्टिन बेंजोएट कीटनाशी की 4 ग्राम मात्रा प्रति 10 लीटर की दर से प्रयोग करें अथवा क्लोरंतरनिलीप्रोल रसायन का 4 मिलीलीटर प्रति 10 लीटर की दर से प्रयोग करें। ➢ उर्द/मूँग में पीला मोजैक रोग के वाहक कीट सफेद मक्खी व पाड सकिंग बग की रोकथाम हेतु फ्लॉनिकामिड 50 डब्ल्यू जी 4 ग्रा0 प्रति 10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें व फली बेधक के नियंत्रण हेतु इमामेक्टिन बेंजोएट कीटनाशी की 4 ग्राम मात्रा प्रति 10 लीटर की दर से प्रयोग करें। ➢ सब्जियों में (टमाटर, बैंगन, फूलगोभी व पत्तागोभी) शीर्ष एवं फल बेधक एवं फूलगोभी, पत्तागोभी में डायमंड बैक मोथ की निगरानी हेतु फेरोमोन प्रपंच 3–4/एकड़ लगाए। सब्जियों में कीटों के नियंत्रण हेतु नीम गिरी 4 प्रतिशत (40 ग्रा0 नीम गिरी का चूर्ण 1 ली0 पानी में) का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए।
5	**बागवानी. प्रबंधन**	➢ फल पौधों का रोपण इस माह के मध्य तक पूरा करें। ➢ वायु–अवरोधक बीजू पौधें इस माह में भी लगा सकते है। ➢ पहले से लगे वायु–अवरोधक वृक्षों की बाग में फैली शाखाओं को काट दें। ➢ मुलवृंत पौधों से फुटान को ध्यानपूर्वक हर 15 दिन बाद हटा दें। ➢ छोटे पौधों को सीधा रखने के लिए बंछटी का सहारा दें। ➢ फलदार पौधों के निचले हिस्से से निकले अनउत्तपादक सकर्स को हटा दें । कटे हिस्सों पर बोंडेक्स पेस्ट का लेप करें। ➢ फलदार पौधों के तने के चारो तरफ गहरी खुदाई करें ताकि खरपतवार अच्छी तरह से गहराई से निकल सके, परन्तु जड़ों को तथा तनें को कोई नुकसान न पहुंचें।

		➢ किन्नौ पौध प्रर्वधन हेतु जट्टी–खट्टी की पौध तैयार करने के लिये बीज की बुआई की जा सकती है। ➢ चश्मा चढ़ाने के लिये उपयुक्त समय है । इसकी तैयारी पुर्ववतः रखें । चश्मा चढाने से पहले मुलवृंत को एकल तना बना दें तथा आस–पास की सारी टहनियों को काट दें। ➢ अक्टूबर माह के अंत में जिस मुलवृंत में सफेद धारियां नजर आये उसे प्रर्वधन के लिये चुने। ➢ उत्तम किस्म के पौधे की आंख को प्रर्वधन के लिये चयन करें। ➢ मुलवृंत पर 1.5 सेमी. क्षितिज चीरा लगायें तथा एक चीरा 3 सेमी का ऊर्ध्वाधर बनाये इसमें चयन की हुई आंख को लगाकर सुतली या पोलीथीन की पट्टी से बांध दें। याद रखें कलिका बांधते समय न दबे। ➢ नये तथा पांच साल से कम आयु के पौधों में यदि चाहे तो दलहनी फसलों की बुवाई की जा सकती है। दलहनी फसलों के बुवाई करने से भूमि की उर्वरा शक्ति में बढ़ोत्तरी होती है। ➢ अक्टूबर माह में पपीते की रोपाई करें । 90 ग्राम यूरिया, 250 ग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट एवं 110 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश का मिश्रण मिलाकर पौधे के तने से दूर एक इंच गहरा गोलाकार गड्ढा बनाकर प्रत्येक पौधे को क्यारी में लगााने के बाद 2 महीने के अंतराल पर 6 बार प्रयोग करें। ➢ नींबू में कैंकर ग्रस्त टहनियां काट दें, कैंकर रोग के प्रकोप को रोकने के लिए स्ट्रेप्टोसाइक्लीन १० ग्राम एवं कॉपर ऑक्सी क्लोराइड २०० ग्राम को १०० लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें। ➢ नींबू के विकसित बाग (४–५ वर्ष) में १०० किलोग्राम गोबर की खाद , 1.२५ किलोग्राम सिंगल सुपर फास्फेट व ०.५० किलोग्राम मूरते ऑफ पोटाश एवं ०.४५ किलोग्राम नत्रजन के साथ –साथ ०.२५ किलोग्राम जिंक सल्फेट का प्रयोग करें । ➢ अमरूद के एक वर्ष के पौधे के लिए प्रति वृक्ष ३० ग्राम नत्रजन जो बढ़कर क्रमशः ६ वर्ष या उससे अधिक उम्र के पौधे के लिए १८० ग्राम नत्रजन होगा, का प्रयोग करें ➢ बेर के वृक्षों में नत्रजन उर्वरक की दूसरी मात्रा दें। यह मात्रा 50 ग्राम नत्रजन से 250 ग्राम नत्रजन प्रति पौधें के हिसाब से प्रथम वर्ष से पांचवें या अधिक वर्ष तक के पौधों में दें। ➢ आम के फलदार पौधों में यदि अब तक गुम्मा रोग ग्रस्त टहनियां न हटा दी हो तो इस माह अवश्य हटा दें। गुम्मा रोग की रोकथाम हेतु नैपथलीन एसिटिक एसिड का २०० पी. पी. एम. अथवा प्लेनोफिक्स ४ मिलीलीटर प्रति ६ लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें तथा इसमें बाविस्टीन 0.1 प्रतिशत भी मिला दें।

		➢ आँवला में शूट गाल मेकर से ग्रस्त टहनियों को काटकर जला दें तथा शुष्क विगलन की रोकथाम के लिए ६ ग्राम बोरेक्स प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें । ➢ केले के बाग में प्रति पौधा ५५ ग्राम यूरिया, १५५ ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट एवं २०० ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रयोग कर भूमि में मिला दें ।
7.	वानिकी प्रबंधन	• खेतों में कृषि वानिकी के अंतर्गत लगाए गए पेड़ों की उचित देखभाल करते हुए आवश्यकतानुसार निराई गुड़ाई और सफाई करें ताकि पेड़ों में अच्छी वृद्धि हो सके। • वानिकी पौधशाला में पर्याप्त धूप बनाए रखने के लिए छायादार पेड़ों की निचली शाखाओं की छंटाई की जा सकती है। वानिकी पौधशाला को खरपतवार और रोग मुक्त रखें।

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

1. डॉ जी. एस. पंवार 2. डॉ दिनेश साह 3. डॉ ए.सी. मिश्रा 4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव 5. डॉ राकेश पाण्डेय	6. डॉ मयंक दुबे 7. डॉ दिनेश गुप्ता 8. डॉ पंकज कुमार ओझा 9. डॉ सुभाष चंद्र सिंह